धूप छाँव

एवं

अन्य कहानियाँ

असरार गाँधी

धूप छाँव और दूसरी कहानियाँ

असरार गाँधी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: फ़रवरी, 2026

© असरार गाँधी

प्यारे दोस्त संतोष भदौरिया

और रियाज़ खान के नाम

कि

जिनकी दोस्ती मेरी ताक़त है।

अनुक्रम

धूप-छाँव	5
आड़े तिरछे दायरे	25
वह जो रास्ते में खोई गई	34
मार्केटिंग	42
रिहाई	55
छलावा	69
बिल्ली	88
रास्ते बन्द हैं सब	97
नाली में उगे पौधे	110
काल दूत	122
अख़बारों में लिपटी रोटियां	131
ब्लैक आउट	138
समझौते का दुख	157
हैरत में हूँ	176
गुबार	185
शावर का शोर	198
गहरे बादल	214

एक झूठी कहानी का सच 223

आश्रय स्थल 233

स्पेस 246

सर्द मौसम की तपिश 256

कांटे 269

धूप-छाँव

वह अपना घर छोड़कर ओल्ड एज होम आ गया था और उसके दिन आँसुओं से भर गए थे। पिछले पचास वर्षों की जिंदगी भूलना इतना आसान नहीं था। हर पल कुछ न कुछ बातें उसके दिल और दिमाग में सूई की तरह तैरती रहतीं और उसका पूरा अस्तित्व छलनी हो कर रह जाता।

किसी ने दरवाजा खटखटाया तो उसे बिस्तर छोड़कर उठना पड़ा।

बाहर होम का नौकर खड़ा था।

"क्या बात है?"

वह नौकर को देखते हुए बोला।

"चाय का समय है, आप मेस में आकर चाय पी लीजिए।"

"चलो, मैं आता हूँ।"

वह कपड़े बदलकर मेस की तरफ चल पड़ा।

बड़ी हरी-भरी जगह पर था यह होम। यहां के लोग बड़े नरम-मिजाज थे। बहुत ही प्रेम से बातें करते, हर तरह का ख्याल रखते, शायद उन्हें ऐसी ट्रेनिंग ही दी गई थी।

उसने मेस में चाय पी और बाहर आकर लॉन में रखी हुई आराम कुर्सी पर बैठ गया। लॉन पर और भी कई लोग बैठे थे जिन्हें वह नहीं जानता था क्योंकि उसे यहां आए हुए अभी कुछ ही दिन हुए थे।